अक्षमताओं के बजाय क्षमताओं के साथ कार्य करना

विशेष शिक्षक के रूप में मेरे अनुभव

पुष्पलता पाण्डेय

जब भी विकलांग बच्चों को लेकर बात होती है, तो एक अलग-सा माहौल बनता है— जहाँ कुछ लोगों में इनके लिए दया और सहानुभूति दिखाई देती है, वहीं कुछ लोग इन्हें समझना ही नहीं चाहते हैं। शिक्षक होने के नाते यह हमारा दायित्व है कि हम उनकी भावनाओं, व्यवहार, आवश्यकता का आदर करते हुए उन्हें अपने तक आने दें। हम उनकी समस्याओं, अधिगम की आवश्यकताओं को जानें। विकलांग बच्चों को सीखने का समान अवसर सुनिश्चित कराएँ। शिक्षक से जुड़ाव बनाने के पर्याप्त अवसर दें।

अक्षमताएँ, चाहे शारीरिक हों या बौद्धिक, अधिगम की प्रक्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। हमें विकलांगता वाले प्रत्येक बच्चे की विशेष आवश्यकताओं की जानकारी होनी चाहिए। मुझे ऐसा लगता है कि कुछ कारक बच्चों की समस्याओं को स्पष्ट रूप से प्रभावित करते हैं। इनमें से कुछ कारक सभी बच्चों के लिए समान हैं, लेकिन बाक़ी बच्चों के लिए अन्य बातों के साथ इन्हें भी ध्यान में रखना शिक्षक के लिए लाभदायक हो सकता है, जैसे :

- व्यक्तिगत भिन्नताएँ
- बच्चे की कार्यात्मक योग्यताओं को बढ़ाने के लिए उपलब्ध सहायक सामग्रियाँ
- सहपाठी समूह व विद्यालय प्रशासन द्वारा विकलांग बच्चों की स्वीकार्यता
- व्यक्तिगत प्रवृत्ति एवं अभिरुचियाँ
- शाला व समुदाय का समग्र वातावरण

ये सभी कारक सभी बच्चों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक विकास को प्रभावित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। विकलांग बच्चों को और अधिक दिक़्क़त होती है, क्योंकि वे अपनी आवश्यकता को ठीक से बता भी नहीं पाते हैं। ऐसे में एक शिक्षक होने के नाते हमारी भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

मेरा अनुभव है कि ऐसे बहुत-से शिक्षक होते हैं जो इन बच्चों की मदद के लिए कुछ करना तो चाहते हैं, पर यह नहीं जानते कि इसके लिए कहाँ से और कैसे समर्थन प्राप्त किया जा सकता है। धीरे-धीरे समय बीतता जाता है और विकलांग बच्चा एक कक्षा से दूसरी में चला जाता है तो शिक्षक सोचने लगता है कि वह कब अपनी पढ़ाई पूरी करेगा और स्कूल से निकलेगा ताकि वह उसके बारे में सोचना बन्द कर सके। कुछ विद्यालय भर्ती प्रक्रिया में ही तमाम तरह के अवरोध पैदा करके इन बच्चों के निष्कासन की एक परिष्कृत प्रक्रिया का अभ्यास करते हैं ताकि वे अपना उच्च शैक्षणिक रिकॉर्ड बनाए रख सकें। लेकिन यह भी सच है कि कई शिक्षक इन बच्चों की कक्षागत चुनौतियों को स्वीकारते हैं और इनके साथ कार्य भी करते हैं।

बच्चों को पहचानने की प्रक्रिया

विकलांग बच्चे के साथ जितनी जल्दी हम क़दम उठाते हैं, उसका परिणाम उतना ही सकारात्मक होता है। सूची काफ़ी लम्बी है— सबसे पहले बच्चे का अवलोकन करना; माता-पिता से मिलकर बच्चे की केस स्टडी तैयार करना। चिकित्सकीय प्रमाणपत्र लेना। शिक्षक से बच्चे से जुड़ी गतिविधि पर जानकारी लेना। कक्षा में अवलोकन करना, सहपाठियों के साथ और खेल के मैदान पर उनके व्यवहार आदि बातों को ध्यान में रखना। जाँच सूची का उपयोग करना उसके माध्यम से व्यक्तिगत शैक्षिक योजना (आईईपी) तैयार करना। क्रियात्मक मूल्यांकन करना। चिकित्सकीय मूल्यांकन करवाना। अभिभावकों को समय-समय पर बच्चों के साथ किए गए कार्यों में शामिल करना। वार्षिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए छोटे-छोटे तिमाही लक्ष्य तैयार करना। कार्यपुस्तिका तैयार करना। बौद्धिक, शारीरिक क्षमता विकास के लिए गतिविधि सुनिश्चित कराना। सामाजिक, भावनात्मक विकास के लिए आयोजित गतिविधि में स्थान देना और ज़िम्मेदारी देना।

अभिभावकों की प्रतिक्रिया

माता-पिता के साथ एक अच्छा रिश्ता बनाया जा सकता है यदि वे अपने बच्चे की शारीरिक आवश्यकताओं को स्वीकार करते हैं और विशेष शिक्षक से यथार्थवादी उम्मीदें रखते हैं। कुछ माता-पिता अपने बच्चों पर बहुत अधिक ध्यान देते हैं, तो कुछ माता-पिता उनसे अपना पीछा छुड़ाना चाहते हैं। वे उनकी बौद्धिक आवश्यकता को समझ नहीं पाते या स्वीकार नहीं पाते और न ही जल्दी सहयोग कर पाते हैं। इसका ख़ामियाज़ा बच्चों को उठाना पड़ता है। यहाँ तक कि

विद्यालय में कभी-कभी एक विशेष शिक्षक की छवि ऐसी हो जाती है कि जिन्हें पढ़ने में दिक़्क़त है, केवल वही बच्चे उसकी कक्षा में आते हैं। एक बच्चे को व्यवहार सम्बन्धी दिक़्क़तें थीं। उसके माता-पिता को जैसे ही यह पता चला कि वह विशेष शिक्षक की कक्षा में जा रहा है तो उन्हें यह स्वीकार्य नहीं हुआ। आज भी विशेष शिक्षा को लेकर जानकारी का अभाव व्याप्त है। यह शिक्षकों के प्रयास से ही दूर होगा। शिक्षकों को बच्चों में होने वाले परिवर्तनों पर पालकों के साथ चर्चा करनी चाहिए और उनकी आवश्यकता से परिचित कराना चाहिए।

मूल्यांकन और विकलांग बच्चे

प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति और शैली अलग होती है। हमें कई तरह से अपने बच्चों का मूल्यांकन करना चाहिए, जैसे कि सामूहिक कार्य मूल्यांकन, सतत मूल्यांकन, खुली पुस्तक परीक्षा। साथ ही बच्चों की क्षमता के अनुरूप परीक्षा तैयार करें। यदि इसमें विशेष शिक्षक भी शामिल हों तो सभी बच्चों और शिक्षकों को इसका लाभ मिलेगा। कुछ शिक्षक साथियों का सोचना है कि बच्चों के नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम (आरटीई) के कार्यान्वयन के बाद अनुत्तीर्ण न करने का मतलब अधिगम के परिणामों का आकलन न करना है। यह एक व्यापक मान्यता है कि इन प्रावधानों ने अधिगम के परिणाम कमज़ोर कर दिए हैं। हमें लगता है कि सिर्फ़ लिखित परीक्षा का परिणाम ही मुख्य होता है। लेकिन ऐसा नहीं है। एनसीएफ 2005 में परीक्षा मूल्यांकन के अन्तर्गत सुधारों को सुझाया गया है। मूल्यांकन से बच्चों की ताक़त और कमज़ोरियों को पहचान सकते हैं और उसके अनुसार सुधार ला सकते हैं। विकलांग बच्चों के लिए उपचारात्मक शिक्षण योजना बना सकते हैं।

हमेशा याद रहने वाली — प्रभा

विशेष शिक्षक होने के नाते मेरे बहुत सारे अनुभव ऐसे हैं जिन्हें मैं कभी नहीं भूल सकती हूँ। आज मुझे अपने पुराने दिनों के पन्नों से प्रभा की याद आई। एक अलग-सा जुड़ाव हो गया था मेरे और प्रभा के बीच। बहुत कम दिनों में हमारे बीच दोस्ती हो गई थी। प्रभा शासकीय प्राथमिक शाला, देवपुर में कक्षा 4 में पढ़ रही थी। कक्षा के अवलोकन के दौरान हमने देखा कि प्रभा को दृष्टि सम्बन्धित कुछ तक़लीफ़ थी जिसकी वजह से उसे कक्षा में दिक़्क़त हो रही थी। इसलिए उसका नेत्र परीक्षण किया गया। पता चला कि उसकी दृष्टि क्षमता बहुत तेज़ी-से कम हो रही थी। अभिभावकों से मिलकर चिकित्सीय जाँच के लिए कहा गया। इस सारी प्रक्रिया में एक वर्ष बीत गया। उसकी अल्प दृष्टि अक्षमता को ध्यान में रखकर शैक्षणिक कार्ययोजना बनाई गई। उस समय सहायक उपकरण (10+डोम मैग्निफायर) की मदद से किताबों को पढ़ने, लिखने के लिए कार्ययोजना बन रही थी। रिपोर्ट के अनुसार ऑप्टिक नर्व से जुड़ी बीमारी के कारण वह बहुत जल्दी अपनी बची हुई दृष्टि भी खोने वाली थी। प्रभा को इस बारे में नहीं बताया गया था। सप्ताह में दो दिन घर पर हमारी मुलाक़ात होती थी। एक दिन स्कूल में प्रभा ने कहा कि मैडमजी मुझे आपका चेहरा साफ़ नहीं दिख रहा है। उसने यह बात मुझे छूकर बताई। यह सुनकर बहुत दुख हुआ क्योंकि कुछ स्थितियों में हम कुछ नहीं कर सकते हैं। धीरे-धीरे प्रभा को दिखना और भी कम हो गया, लेकिन अच्छी बात यह रही कि परिवार के सदस्यों ने उसकी परेशानी को समझा और उसका साथ दिया। विशेष शिक्षक के नाते मैंने उसे ब्रेल लिपि पढ़ाने का निर्णय लिया और उसने अपनी पढ़ाई जारी रखी।

माता-पिता की भूमिका

माता-पिता हमारे जीवन में अहम भूमिका निभाते हैं। वे हमारी अच्छाइयों को, हमारी कमज़ोरियों को समझते और स्वीकारते हैं। हर बच्चे की आवश्यकता अलग होती है। माता-पिता से यही अपेक्षा है कि विकलांग बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकता के प्रति शीघ्र हस्तक्षेप करें। उनकी अक्षमता को उनके विकास के रास्ते में नहीं आने दें। उन्हें स्वीकारें। दूसरों के सामने भी अपनाएँ। उनके लिए शिक्षा समावेशी हो। शिक्षक और माता-पिता के सहयोग से सभी बाधाओं को दूर किया जा सकता है, ख़ासतौर पर यदि विशेषज्ञों का सहयोग भी लिया जाए।

एक विशेष शिक्षक की भूमिका

एक शिक्षक के रूप में आपका सम्बन्ध उस क्षण शुरू होता है जब आप विद्यार्थी से मिलते हैं। कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कोई विद्यार्थी कितना मुश्किल हो सकता है, आपको उसे जानने की चुनौती को गले लगाने की ज़रूरत है। आपकी कक्षा में सीखने-सिखाने का सकारात्मक वातावरण होना चाहिए। शिक्षकों को बच्चों की शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक आवश्यकताओं के बारे में पता होना चाहिए। आपकी कक्षा समूह के काम के लिए अनुकूल होनी चाहिए। आपको शिक्षण प्रक्रिया में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। विकलांग बच्चे को न केवल अपनी विकास सम्बन्धी दिक़्क़तों से जूझना होता है, बल्कि अपने प्रति कभी सहपाठी तो कभी परिवार से मिलने वाली नकारात्मक धारणा का सामना भी करना होता है। कक्षा में उसकी अक्षमताओं के बजाय उसकी क्षमताओं के साथ चलें।

इस बारे में सोचें कि बच्चे अपने कौशल के साथ नियमित रूप से कैसे आगे बढ़ सकते हैं। जब कक्षा में सभी गतिविधियाँ उनकी आवश्यकता के अनुसार होंगी और वे उनमें भाग लेंगे तो धीरे-धीरे उनका विकास होगा। व्यवहार सम्बन्धी समस्या में व्यक्तिगत रूप से कार्यवाही करने से पूर्व समझें कि ऐसा व्यवहार किसलिए है। ऐसी सफल कहानियाँ दिखानी, सुनानी चाहिए जो बच्चों से जुड़ी हों। हर एक बच्चा अलग होता है और शिक्षक का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

सभी को अपनी शिक्षा पूरी करने का अधिकार है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य एक अच्छा नागरिक तैयार करना है। विद्यालय इस दिशा में एक अच्छी पहल कर सकता है। वह समुदाय के सामने उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है और अभिभावकों को जानकारी देकर सजग कर सकता है।

पुष्पलता पाण्डेय वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी स्कूल धमतरी, छत्तीसगढ़ में विशेष शिक्षक के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने विशेष बच्चों के साथ शासकीय विभाग में 5 वर्ष तक काम किया है। वे कई अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं से भी जुड़ी रही हैं। उन्हें विशेष बच्चों के साथ काम करने का कुल 12 वर्षों का अनुभव है। उनसे pushplata.pandey@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।